International Journal of Applied Research 2016; 2(6):800-801

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR2016; 2(6): 800-801
www.allresearchjournal.com
Received: 23-04-2016
Accepted: 27-05-2016

डॉ0 आभा त्यागी
प्राचार्या वैश्य कन्या महाविधालय
समालखा (पानीपत) हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ0 आभा त्यागी
प्राचार्या वैश्य कन्या महाविधालय
समालखा (पानीपत) हरियाणा, भारत

भारतीय-मीडिया की चुनौतियॉ

डॉ0 आभा त्यागी

तकनीकी और संचार क्रान्ति ने विश्व को समेटकर एक 'विश्वग्राम' 'ग्लोबल विपेज' में बदल दिया है विश्व ग्राम की यह परिकल्पना मार्शल मैक्लूहान की थी, लेकिन हमारे यहॉ इस अवधारणा के मूल स्वर पहले से ही विद्यमान थे हमारे चिंतक ऋग्वेद में इस अवधारणा के सूत्र खोजते हुए 'विश्व पुष्टं ग्रामे अस्मिन अनातुरम' का उदघोष करते है एक 'विश्व ग्राम' का स्वप्न हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने देखा था।

'विश्व ग्राम' की परिकल्पना को साकार करने का दावा करते हुए भूमंडलीकरण का नारा शक्तिशाली और विकसित देशों ने लगाया है जो मूलतः अल्प विकसित और विकासशील देशों के शोषण और दोहन के उददेश्य से निर्देशित है। जवाहर लाल कौल अपनी पुस्तक 'हिंदी पत्र कारिता बाजार भाव' में भूमंडलीकरण को व्याख्या कुछ ऐसे करते है- ग्लोबलाईजेशन या वैश्वीकरण वैसा ही शब्द बनता जा रहा है। सामान्यतः ''वैश्वीकरण विश्व के विभिन्न देशों के बीच आर्थिक संबंधों, सहयोग और विनिमय को व्यापकता तथा गहराई देने की प्रक्रिया को कह सकते है।'' भूमंडलीकरण मीडिया का उभार सहज और स्वाभाविक स्थितियों की देन नही है बल्कि भूमंडलीय मीडिया के उभार की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक इक्कीसवी सदी की हिंदी पत्रकारिता का एक पृष्ठ भूमि है। सकारात्मक पक्ष यही समझा जा रहा है कि वह क्षेत्रीय भाषा के शब्दों से हिंदी को नया स्वरूप दे रही है राष्ट्रीय अखबार तो पूरी तरह भूमंडलीय रंग में डूबते चले जा रहे है आज 'तकनीक के वर्चस्व' के कारण तकनीक भाषा निर्माण को दिशा दे रही है भूमंडलीकरण की ऑधी हमारी सांस्कृतिक विरासत की जड़ो को उखाडकर उपभोक्तावादी संस्कृति का पौधा रोप रही है तो हिंदी प्रिंट मीडिया के सामने भाषा के संस्कार को विकसित करने की चुनौती सामने खडी है।

निर्मल वर्मा का कहना है ''जहॉ अपनी परम्परा और सांस्कृतिक विरासत से नाता तोड़ने की प्रतिस्पर्द्धा हो, वहॉ सांस्कृतिक जड़ता के अतिरिक्त और क्या हो सकता है। सांस्कृतिक दरिद्रता के इस वातावरण मे भाषा का विकास और संस्कार होने की गुंजाइश बहुत कम बची रहती है।'' भारतीय आज के भूमंडलीय समय में हमे कई प्रश्न, आंशकाऍ और संभावनाऍ घेर रही हैं। भारतीय मीडिया की सम्पूर्ण स्थिति भिन्न-भिन्न रूपों मे कई-कई स्तरों पर आज भूमंडलीय मीडिया की चुनौतियो से टकरा रही है। भूमंडलीकरण की ऑधी मे प्रिंट मीडिया भी नही बचा, बहुआयामी भूमंडलीकरण के दौर में शाक्तिशाली राष्ट्रो के मीडिया आक्रमण की चुनौती का सामना कैसे किया जा सकता है? ये सब मुद्दे हमारे बुद्धिजीवियों की चिंता का विषय बन रहे है। भारतीय मीडिया के सम्मुख भूमंडलीकरण की समूची प्रक्रिया से उभरने वाली नई-नई दिशाऍ चुनौती बन रही है भूमंडलीय मीडिया के चलते विकसित राष्ट्रो का व्यवसायिक और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद यहॉ अपने पॉव पसार रहा है हम सांस्कृतिक संकट के दौर से गुजर रहे है। अभूतपूर्व सांस्कृतिक विरासत के बावजूद मूल्यों की दृष्टि से हम अभाव की स्थिति मे जी रह है। 'थर्ड वेव' में टॉफलर ने जो भविष्यवाणियॉ की थी, वे सब सच साबित हुई उन्होने घोषणा की थी ''भविष्य का युद्ध संचार माध्यमों के जरिये लड़ा जाएगा। शक्तिशाली राष्ट्र हथियारों के इस्तेमाल के बिना मस्तिष्क के प्रयोग से युद्ध लडेगें। वस्तुतः यह ज्ञान और बुद्धि का युद्ध होगा। जिसमें हथियारों के बिना हार-जीत का निर्णय हो जाएगा टॉफलर की यह बात सच साबित हुई आज राजनीतिक या सैन्य दृष्टि से नही, अपितु सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से शक्तिशाली राष्ट्रअपना वर्चस्व कायम रखने की दिशा में चैनल युद्ध लड रहे है। इस तरह भूमंडलीकरण हमारी उन सांस्कृतिक उपलब्धियो को पृष्ठभूमि में डाल रहा है जिसे अर्जित करने के कई युगो की साधना और तपस्या छिपी हुई है। मानव परिवारों की विशिष्टता को नष्ट कर किसी एक ताकत की मनोवांछित संस्कृति या अपसंस्कृति को विश्व के घरो मे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के जरिए पहुँचाया जा रहा है। पाठको, दर्शको, श्रोताओं तक जल्दी से जल्दी सूचना पहुँचाने की प्रतिस्पर्द्धा मे सूचनाऍ और तथ्य सार्थक चुनने तथा छॉटने की प्रक्रिया से निकलकर नही आते बिना जॉचे परखे सत्य की कसौटी पर कसे बिना इन्हे बेहतरीन ढंग से पेश कर दिया जाता है इससे मीडिया से सूचनाओं और तथ्यों की प्रामाणिकता व विश्वसनीयता को भी आधात पहुँचा है।

भूमंडलीकरण की ऑधी से हमारी राष्ट्रभाषा की अस्मिता पर प्रहार हो रहा है। अँग्रेजी भाषा का वर्चस्व उसका आतंक बढ़ा है जो अर्न्तराष्ट्रीय बाजार की भाषा है उसे संपर्क भाषा मानकर अंग्रेजी के माध्यम से ही देश विदेश में फैले विश्व बाजार से संपर्क साधता है मीडिया मे अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ा है। हिंदी उपेक्षित है।

वैश्वीकरण के कारण मीडिया मे ग्लैमर बढ़ा है चकाचौंध बढ़ी है। आज के मीडिया के लिए चुनौती है कि वह किस तरह अपने ऊपर पड़ी व्यावसायिकता की चादर को हटाकर समाज में व्याप्त मौजूदा समस्याओं के प्रति जनमानस में

चेतना पैदा कर कैसे पत्रकारिता में विचारों की गंभीरता लाये, कैसे भावी पीढ़ी को संस्कारित करे, उन्हे कैसे राष्ट्रीय और मानवीय सरोकारों से परिचित कराये। मीडिया हमे संस्कारो से कैसे संस्कारित करे यह हमारी चुनौती है मीडिया मे छाये बाजारवाद ने साहित्य को पृष्ठभूमि में डाल दिया है। यह भी चुनौती है कि वह कैसे सजग उत्तरदायित्व पूर्ण तथा लोकतांत्रिक स्वरूप को गढ़कर 'चतुर्थ स्तंभ' के अपने आदर्श की रक्षा करे। शिक्षा तथा साक्षरता के माध्यम से समाज के विकास को गति देना भी उसका लक्ष्य है, एवम साम्राज्यवादी सूचनाओ के इंद्रजाल से मुक्त होकर राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का पाठ पढ़ा सके तथा ग्लैमर चकाचौध के आवरण को चीरकर समाज को स्वस्थ दिशा दे सके।

'एड वर्ड एस हर्मन' और 'रॉबर्ट डब्ल्यूः मैक्चेस्ने' ने संयुक्त रूप से लिखी अपनी पुस्तक 'दि ग्लोबल मीडिया दि न्यू मिशनरीज ऑफ कॉरपोरेट कैपिटिलिज्म' में संचार माध्यमों के भूमंडलीकरण के विकास और प्रभावों को आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक गतिशीलता को समझाया है। इसलिए आवश्कताओं के कठिन संकल्प और निष्ठा की अपने वजूद की रक्षा का दृढ़ संकल्प हमे भूमंडलीय मीडिया के दुष्प्रभाव से बचा सकता है। आधुनिकता के जाल को काटने के लिए मीडिया को सही रास्ते पर आज नही तो कल आना ही होगा अन्यथा हमारी संस्कृति मिट जाएगी और संस्कृति का मिट जाना देश का मिट जाना होता है।

सन्दर्भ सूचीं

1. जनसंचार और विकास- श्यामाचरण दूबे।
2. प्रीव्यूज़ एंड प्रीमाइसेज-ऑल्विनटॉफलर।
3. दि ग्लोबल मीडिया- दि न्यू मिशनरीज ऑफ कैपिटिलिज्म-एडवर्ड एस हर्मन।
4. राबर्ट डब्ल्यू मैकचेस्ने।
5. अंडर स्टेडिंज मीडिया-दि एक्सटेशन ऑफ मैन-मार्शल मेक्लुहान।
6. भारतीय इलैक्ट्रोनिक मीडिया - डा0 देवव्रत सिंह।